The Eternal Epic of Divine Mother

दुर्गा सप्तशती

DURGA SAPTASHATI

Chapter 5: The Messenger of the Demons and the Divine Dialogue

अध्याय ५: देवी-दूत-संवाद

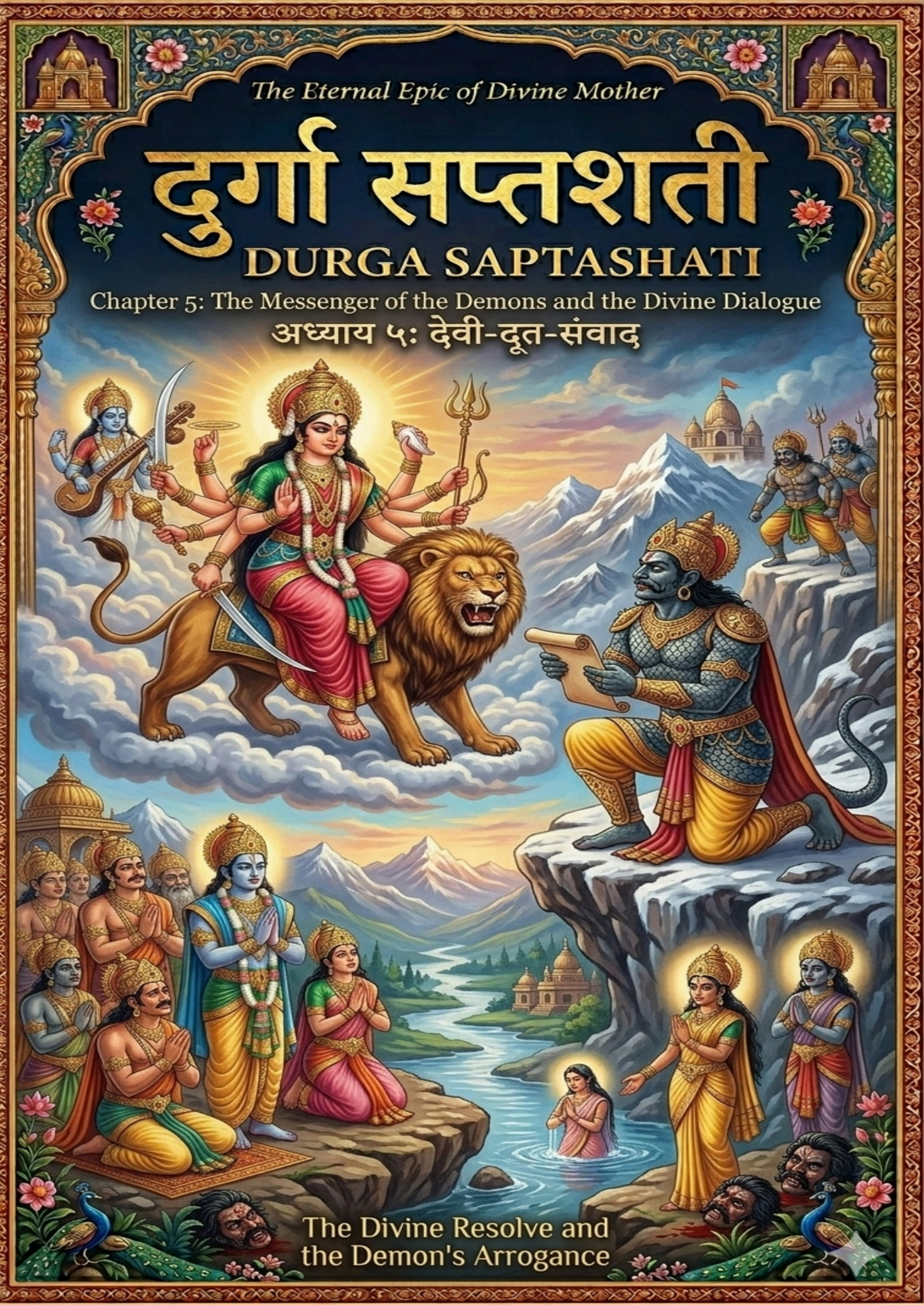

The Divine Resolve and the Demon's Arrogance

Durga Saptashati

|| 'पञ्चम अध्याय' ||

—

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

सारांश: दुर्गा सप्तशती - पञ्चम अध्याय (देवी-दूत-संवाद)

यह अध्याय देवताओं द्वारा देवी की स्तुति, चण्ड-मुण्ड द्वारा अम्बिका के रूप की प्रशंसा सुनकर शुम्भ का उनके पास दूत भेजना और दूत का निराश लौटना वर्णित करता है।

अध्याय की मुख्य बातें:

1. उत्तरी चरित्र का विनियोग और ध्यान: अध्याय की शुरुआत में 'उत्तरी चरित्र' (शेष अध्यायों) का विनियोग और महासरस्वती देवी का ध्यान दिया गया है।
2. देवताओं का निष्कासन: शुम्भ और निशुम्भ नामक असुरों ने अपने बल के घमंड में आकर इंद्र से तीनों लोकों का राज्य और यज्ञभाग छीन लिया तथा सभी देवताओं को अपमानित कर स्वर्ग से निकाल दिया।
3. देवताओं द्वारा स्तुति: राज्यभ्रष्ट देवताओं ने अपनी विपत्तियों को याद कर हिमालय पर जाकर भगवती विष्णुमाया (अपराजिता देवी) का स्मरण किया और उनकी स्तुति की, जिसमें देवी के विभिन्न रूपों (चेतना, बुद्धि, निद्रा, शक्ति, लक्ष्मी आदि) को नमस्कार किया गया है।
4. कौशिकी और कालिका का प्राकट्य: देवताओं की स्तुति के समय पार्वती देवी गंगाजी में स्नान करने आईं। उनके पूछने पर उनके शरीरकोश से 'शिवादेवी' (अम्बिका) प्रकट हुईं, जिन्होंने बताया कि देवता उन्हीं की स्तुति कर रहे हैं। पार्वती के शरीरकोश (कोशिका) से प्रकट होने के कारण अम्बिका 'कौशिकी' कहलाईं। कौशिकी के निकलने के बाद पार्वती का शरीर काला हो गया और वे 'कालिका' नाम से विख्यात हुईं।
5. चण्ड-मुण्ड द्वारा रूप-वर्णन: शुम्भ-निशुम्भ के भृत्य चण्ड-मुण्ड ने हिमालय पर अत्यंत मनोहर रूप वाली अम्बिका को देखा और शुम्भ के पास जाकर उनके अतुलनीय सौंदर्य का वर्णन किया। उन्होंने शुम्भ को बताया कि वह देवी स्त्रियों में रत्न के समान है और उसे अपने अधिकार में कर लेना चाहिए, जैसे उन्होंने अन्य सभी रत्न (ऐरावत, उच्चैःश्रवा, पारिजात, वरुण छत्र आदि) एकत्रित कर लिए हैं।
6. शुम्भ का दूत-प्रेषण: चण्ड-मुण्ड की बात सुनकर शुम्भ ने महादैत्य सुग्रीव को दूत बनाकर देवी के पास भेजा ताकि वह उन्हें प्रसन्न करके शुम्भ के पास ले आए।
7. दूत और देवी का संवाद: दूत ने शुम्भ का संदेश सुनाया कि वह तीनों लोकों का स्वामी है, और देवी (जो स्त्रियों में रत्न हैं) को उनकी या निशुम्भ की पत्नी बन जाना चाहिए ताकि उन्हें महान ऐश्वर्य प्राप्त हो।
8. देवी की प्रतिज्ञा: देवी ने दूत से कहा कि शुम्भ और निशुम्भ पराक्रमी हैं, लेकिन उन्होंने पहले एक प्रतिज्ञा कर ली है: "जो मुझे संग्राम में जीत लेगा, जो मेरे अभिमान को चूर्ण कर देगा तथा संसार में जो मेरे समान बलवान् होगा, वही मेरा स्वामी होगा।" इसलिए, शुम्भ या निशुम्भ को स्वयं आकर उन्हें युद्ध में जीतना होगा।
9. दूत का निराश लौटना: दूत ने देवी को घमंड न करने और बलपूर्वक लाए जाने की धमकी दी, किंतु देवी अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहीं और दूत को संदेश के साथ वापस भेज दिया।

इस प्रकार, 'देवी-दूत-संवाद' में देवी की दृढ़ प्रतिज्ञा और शुम्भ की हठधर्मिता का आधार स्थापित होता है, जो आगे के युद्धों का कारण बनता है।

Durga Saptashati
|| 'पञ्चम अध्याय' ||

Chapter 5 :

देवताओं द्वारा देवी की स्तुति, चण्ड-मुण्ड के मुख से अम्बिका के रूप की प्रशंसा सुनकर शुम्भ का उनके पास दूत भेजना और दूत का निराश लौटना

॥ विनियोग ॥

ॐ इस उत्तर चरित्रके रुद्र ऋषि हैं, महासरस्वती देवता हैं, अनुष्टुप् छन्द है, भीमा शक्ति है, भ्रामरी बीज है, सूर्य तत्त्व है और सामवेद स्वरूप है। महासरस्वती की प्रसन्नताके लिये उत्तर चरित्रके पाठमें इसका विनियोग किया जाता है।

॥ ध्यान ॥

जो अपने करकमलोंमें घण्टा, शूल, हल, शङ्ख, मूसल, चक्र, धनुष और बाण धारण करती हैं, शरद् ऋतुके शोभासम्पन्न चन्द्रमाके समान जिनकी मनोहर कान्ति है, जो तीनों लोकोंकी आधारभूता और शुम्भ आदि दैत्योंका नाश करनेवाली हैं तथा गौरीके शरीरसे जिनका प्राकट्य हुआ है, उन महासरस्वती देवीका मैं निरन्तर भजन करता (करती) हूँ।

ऋषि कहते हैं -॥ पूर्वकालमें शुम्भ और निशुम्भ नामक असुरोंने अपने बलके घमंडमें आकर शचीपति इन्द्र के हाथसे तीनों लोकोंका राज्य और यज्ञभाग छीन लिये॥ वे ही दोनों सूर्य, चन्द्रमा, कुबेर, यम और वरुण के अधिकारका भी उपयोग करने लगे। वायु और अग्निका कार्य भी वे ही करने लगे। उन दोनोंने सब देवताओंको अपमानित, राज्यभ्रष्ट, पराजित तथा अधिकारहीन करके स्वर्गसे निकाल दिया। उन दोनों महान् असुरोंसे तिरस्कृत देवताओंने अपराजिता देवीका स्मरण किया और सोचा - 'जगदम्बाने हमलोगोंको वर दिया था कि आपत्तिकालमें स्मरण करनेपर मैं तुम्हारी सब आपत्तियोंका तत्काल नाश कर दूँगी'॥

यह विचारकर देवता गिरिराज हिमालयपर गये और वहाँ भगवती विष्णुमायाकी स्तुति करने लगे॥

देवता बोले -॥ देवीको नमस्कार है, महादेवी शिवाको सर्वदा नमस्कार है। प्रकृति एवं भद्राको प्रणाम है। हमलोग नियमपूर्वक जगदम्बाको नमस्कार करते॥

रौद्राको नमस्कार है। नित्या, गौरी एवं धात्रीको बारम्बार नमस्कार है ज्योत्स्नामयी, चन्द्ररूपिणी एवं सुखस्वरूपा देवीको सतत प्रणाम है॥

शरणागतोंका कल्याण करनेवाली वृद्धि एवं सिद्धिरूपा देवीको हम बारम्बार नमस्कार करते हैं। नैर्ऋती (राक्षसों की लक्ष्मी), राजाओं की लक्ष्मी तथा शर्वाणी (शिवपत्नी) - स्वरूपा आप जगदम्बाको बार-बार नमस्कार है॥

दुर्गा, दुर्गपारा (दुर्गम संकटसे पार उतारनेवाली), सारा (सबकी सारभूता), सर्वकारिणी, ख्याति, कृष्णा और धूम्रादेवीको सर्वदा नमस्कार है॥

अत्यन्त सौम्य तथा अत्यन्त रौद्ररूपा देवीको हम नमस्कार करते हैं, उन्हें हमारा बारम्बार प्रणाम है। जगत्की आधारभूता कृति देवीको बारम्बार नमस्कार है॥ जो देवी सब प्राणियोंमें विष्णुमायाके नामसे कही जाती हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥

जो देवी सब प्राणियोंमें चेतना कहलाती हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥ जो देवी सब प्राणियोंमें बुद्धिरूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥ जो देवी सब प्राणियोंमें निद्रारूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥ जो देवी सब प्राणियोंमें क्षुधारूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥ जो देवी सब प्राणियोंमें छायारूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥ जो देवी सब प्राणियोंमें शक्तिरूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥

जो देवी सब प्राणियोंमें तृष्णारूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥ जो देवी सब प्राणियोंमें क्षान्ति- (क्षमा-) रूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥ जो देवी सब प्राणियोंमें जातिरूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥ जो देवी सब प्राणियोंमें लज्जारूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥ जो देवी सब प्राणियोंमें शान्तिरूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥

जो देवी सब प्राणियोंमें श्रद्धारूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥ जो देवी सब प्राणियोंमें कान्तिरूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥

जो देवी सब प्राणियोंमें लक्ष्मीरूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥

जो देवी सब प्राणियोंमें वृत्तिरूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥ जो देवी सब प्राणियोंमें स्मृतिरूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥

जो देवी सब प्राणियोंमें दयारूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥

जो देवी सब प्राणियोंमें तुष्टिरूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥

जो देवी सब प्राणियोंमें मातारूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है| जो देवी सब प्राणियोंमें भ्रान्तिरूपसे स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥

जो जीवोंके इन्द्रियवर्गकी अधिष्ठात्री देवी एवं सब प्राणियोंमें सदा व्याप्त रहनेवाली हैं, उन व्याप्तिदेवीको बारम्बार नमस्कार है॥

जो देवी चैतन्यरूपसे इस सम्पूर्ण जगत्को व्याप्त करके स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥

पूर्वकालमें अपने अभीष्टकी प्राप्ति होनेसे देवताओंने जिनकी स्तुति की तथा देवराज इन्द्रने बहुत दिनोंतक जिनका सेवन किया, वह कल्याणकी साधनभूता ईश्वरी हमारा कल्याण और मङ्गल करे तथा सारी आपत्तियोंका नाश कर डाले॥

उद्दण्ड दैत्योंसे सताये हुए हम सभी देवता जिन परमेश्वरीको इस समय नमस्कार करते हैं तथा जो भक्तिसे विनम्र पुरुषोंद्वारा स्मरण की जानेपर तत्काल ही सम्पूर्ण विपत्तियोंका नाश कर देती हैं, वे जगदम्बा हमारा संकट दूर करें॥

ऋषि कहते हैं - राजन्! इस प्रकार जब देवता स्तुति कर रहे थे, उस समय पार्वती देवी गङ्गाजीके जलमें स्नान करने के लिये वहाँ आयीं॥

उन सुन्दर भौंहोंवाली भगवतीने देवताओंसे पूछा - 'आपलोग यहाँ किसकी स्तुति करते हैं?' तब उन्हींके शरीरकोशसे प्रकट हुई शिवादेवी बोलीं -॥

'शुम्भ दैत्यसे तिरस्कृत और युद्धमें निशुम्भसे पराजित हो यहाँ एकत्रित हुए ये समस्त देवता यह मेरी ही स्तुति कर रहे हैं'॥ पार्वतीजीके शरीरकोशसे अम्बिकाका प्रादुर्भाव हुआ था, इसलिये वे समस्त लोकोंमें 'कौशिकी' कही जाती हैं॥

कौशिकीके प्रकट होनेके बाद पार्वतीदेवीका शरीर काले रंगका हो गया, अतः वे हिमालयपर रहनेवाली कालिकादेवीके नामसे विख्यात हुईं॥

तदनन्तर शुम्भ-निशुम्भके भृत्य चण्ड-मुण्ड वहाँ आये और उन्होंने परम मनोहर रूप धारण करनेवाली अम्बिकादेवीको देखा॥

फिर वे शुम्भके पास जाकर बोले- 'महाराज! एक अत्यन्त मनोहर स्त्री है, जो अपनी दिव्य कान्तिसे हिमालयको प्रकाशित कर रही है'॥ वैसा उत्तम रूप कहीं किसीने भी नहीं देखा होगा। असुरेश्वर! पता लगाइये, वह देवी कौन है और उसे ले लीजिये॥

स्त्रियोंमें तो वह रत्न है, उसका प्रत्येक अङ्ग बहुत ही सुन्दर है। तथा वह अपने श्रीअङ्गोंकी प्रभासे सम्पूर्ण दिशाओंमें प्रकाश फैला रही है। दैत्यराज! अभी वह हिमालयपर ही मौजूद है, आप उसे देख सकते हैं॥

प्रभो! तीनों लोकोंमें मणि, हाथी और घोड़े आदि जितने भी रत्न हैं, वे सब इस समय आपके घरमें शोभा पाते हैं॥ हाथियों में रत्नभूत ऐरावत, यह पारिजात का वृक्ष और यह उच्चैःश्रवा घोड़ा - यह सब आपने इन्द्रसे ले लिया है॥ हंसों से जुता हुआ यह विमान भी आपके आँगनमें शोभा पाता है। यह रत्नभूत अद्भुत विमान, जो पहले ब्रह्माजीके पास था, अब आपके यहाँ लाया गया है॥ यह महापद्म नामक निधि आप कुबेरसे छीन लाये हैं। समुद्रने भी आपको किञ्जल्किनी नामकी माला भेंट की है, जो केसरोंसे सुशोभित है और जिसके कमल कभी कुम्हलाते नहीं हैं॥ सुवर्णकी वर्षा करनेवाला वरुणका छत्र भी आपके घरमें शोभा पाता है तथा यह श्रेष्ठ रथ, जो पहले प्रजापतिके अधिकारमें था, अब आपके पास मौजूद है॥ दैत्येश्वर! मृत्युकी उत्क्रान्तिदा नामवाली शक्ति भी आपने छीन

ली है तथा वरुणका पाश और समुद्रमें होनेवाले सब प्रकारके रत्न आपके भाई निशुम्भके अधिकारमें हैं। अग्निने भी स्वतः शुद्ध किये हुए दो वस्त्र आपकी सेवामें अर्पित किये हैं॥ दैत्यराज! इस प्रकार सभी रत्न आपने एकत्र कर लिये हैं। फिर जो यह स्त्रियोंमें रत्नरूप कल्याणमयी देवी है, इसे आप क्यों नहीं अपने अधिकारमें कर लेते?॥

ऋषि कहते हैं -॥ चण्ड-मुण्डका यह वचन सुनकर शुम्भने महादैत्य सुग्रीवको दूत बनाकर देवीके पास भेजा और कहा - 'तुम मेरी आज्ञासे उसके सामने ये-ये बातें कहना और ऐसा उपाय करना जिससे प्रसन्न होकर वह शीघ्र ही यहाँ आ जाय'॥ वह दूत पर्वतके अत्यन्त रमणीय प्रदेशमें जहाँ देवी मौजूद थीं, गया और मधुर वाणीमें कोमल वचन बोला॥

दूत बोला -॥ देवि! दैत्यराज शुम्भ इस समय तीनों लोकोंके परमेश्वर हैं। मैं उन्हींका भेजा हुआ दूत हूँ और यहाँ तुम्हारे ही पास आया हूँ॥ उनकी आज्ञा सदा सब देवता एक स्वरसे मानते हैं। कोई उसका उल्लङ्घन नहीं कर सकता। वे सम्पूर्ण देवताओंको परास्त कर चुके हैं। उन्होंने तुम्हारे लिये जो सन्देश दिया है, उसे सुनो॥ 'सम्पूर्ण त्रिलोकी मेरे अधिकारमें है। देवता भी मेरी आज्ञाके अधीन चलते हैं। सम्पूर्ण यज्ञोंके भागोंको मैं ही पृथक्-पृथक् भोगता हूँ॥ तीनों लोकोंमें जितने श्रेष्ठ रत्न हैं, वे सब मेरे अधिकारमें हैं। देवराज इन्द्रका वाहन ऐरावत, जो हाथियोंमें रत्नके समान है, मैंने छीन लिया है॥ क्षीरसागरका मन्थन करनेसे जो अश्वरत्न उच्चैःश्रवा प्रकट हुआ था, उसे देवताओंने मेरे पैरोंपर पड़कर समर्पित किया है॥ सुन्दरी! उनके सिवा और भी जितने रत्नभूत पदार्थ देवताओं, गन्धर्वों और नागों के पास थे, वे सब मेरे ही पास आ गये हैं॥ देवि! हमलोग तुम्हें संसारकी स्त्रियोंमें रत्न मानते हैं, अतः तुम हमारे पास आ जाओ; क्योंकि रत्नोंका उपभोग करनेवाले हम ही हैं॥ चञ्चल कटाक्षोंवाली सुन्दरी! तुम मेरी या मेरे भाई महापराक्रमी निशुम्भकी सेवामें आ जाओ; क्योंकि तुम रत्नस्वरूपा हो॥ मेरा वरण करनेसे तुम्हें तुलनारहित महान् ऐश्वर्यकी प्राप्ति होगी। अपनी बुद्धिसे यह विचारकर तुम मेरी पत्नी बन जाओ'॥

ऋषि कहते हैं -॥ दूतके यों कहनेपर कल्याणमयी भगवती दुर्गादेवी, जो इस जगत्को धारण करती हैं, मन-ही-मन गम्भीरभावसे मुसकरायीं और इस प्रकार बोलीं -॥

देवीने कहा -॥ दूत! तुमने सत्य कहा है, इसमें तनिक भी मिथ्या नहीं है। शुम्भ तीनों लोकोंका स्वामी है और निशुम्भ भी उसीके समान पराक्रमी है॥ किंतु इस विषयमें मैंने जो

प्रतिज्ञा कर ली है, उसे मिथ्या कैसे करूँ? मैंने अपनी अल्पबुद्धिके कारण पहलेसे जो प्रतिज्ञा कर रखी है, उसे सुनो -॥ 'जो मुझे संग्राममें जीत लेगा, जो मेरे अभिमानको चूर्ण कर देगा तथा संसारमें जो मेरे समान बलवान् होगा, वही मेरा स्वामी होगा'॥ इसलिये शुम्भ अथवा महादैत्य निशुम्भ स्वयं ही यहाँ पधारें और मुझे जीतकर शीघ्र ही मेरा पाणिग्रहण कर लें, इसमें विलम्ब की क्या आवश्यकता है?॥

दूत बोला -॥ देवि! तुम घमंडमें भरी हो, मेरे सामने ऐसी बातें न करो। तीनों लोकोंमें कौन ऐसा पुरुष है, जो शुम्भ- निशुम्भके सामने खड़ा हो सके॥ देवि! अन्य दैत्योंके सामने भी सारे देवता युद्धमें नहीं ठहर सकते, फिर तुम अकेली स्त्री होकर कैसे ठहर सकती हो॥ जिन शुम्भ आदि दैत्योंके सामने इन्द्र आदि सब देवता भी युद्धमें खड़े नहीं हुए, उनके सामने तुम स्त्री होकर कैसे जाओगी॥इसलिये तुम मेरे ही कहनेसे शुम्भ निशुम्भके पास चली चलो। ऐसा करनेसे तुम्हारे गौरवकी रक्षा होगी; अन्यथा जब वे केश पकड़कर घसीटेंगे, तब तुम्हें अपनी प्रतिष्ठा खोकर जाना पड़ेगा॥

देवीने कहा -॥तुम्हारा कहना ठीक है, शुम्भ बलवान् हैं और निशुम्भ भी बड़े पराक्रमी हैं; किंतु क्या करूँ? मैंने पहले बिना सोचे-समझे प्रतिज्ञा कर ली है॥ अतः अब तुम जाओ; मैंने तुमसे जो कुछ कहा है, वह सब दैत्यराजसे आदरपूर्वक कहना। फिर वे जो उचित जान पड़े, करें॥

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत

देवी माहात्म्य में 'देवी-दूत-संवाद' नामक पाँचवाँ अध्याय पूरा हुआ ॥

Durga Saptashati

|| 'Chapter Five' ||

Chapter 5 :

The Devas' praise of the Goddess, Shumbha sending his messenger to Ambika after hearing the praise of her form from Chanda and Munda, and the messenger's disappointed return.

॥ **Invocation** ॥

Om, the sage of this later section is Rudra, the deity is Mahasaraswati, the meter is Anushtubh, the power (Shakti) is Bhima, the seed (Bija) is Bhramari, the essence (Tattva) is Surya, and the form is Samaveda. This invocation is used for the recitation of the later section for the pleasure of Mahasaraswati.

॥ **Dhyana (Meditation)** ॥

I constantly worship the Goddess Mahasaraswati, who holds a bell, trident, plough, conch, mace, discus, bow, and arrow in her lotus hands; whose beautiful radiance is like the resplendent moon of the autumn season; who is the basis of the three worlds and the destroyer of the demons Shumbha and others; and who appeared from the body of Gauri.

The Rishi says: ॥ In the past, the Asuras named Shumbha and Nishumbha, in the pride of their strength, snatched the kingdom of the three worlds and the share of the sacrifice from the hand of Shachi's husband, Indra.॥

Those two also began to enjoy the authority of Surya, Chandra, Kubera, Yama, and Varuna. They also began to perform the functions of Vayu and Agni. Insulting, dethroning, defeating, and

stripping all the Devas of their authority, they drove them out of heaven. The Devas, thus despised by those two great Asuras, remembered the invincible Goddess and thought - 'The Mother of the World had granted us a boon that if we remember her in times of adversity, she would instantly destroy all our calamities'॥

With this thought, the Devas went to the King of Mountains, Himalaya, and began to praise the divine Vishnu-Maya there॥

The Devas said: ॥ Salutations to the Goddess, eternal salutations to Mahadevi Shiva. Obeisance to Prakriti and Bhadra. We constantly bow to the Mother of the World॥

Salutations to Raudra. Repeated salutations to Nitya, Gauri, and Dhatri. Constant salutations to the Goddess who is Jyotsnamayi (full of moonlight), Chandra-rupini (in the form of the moon), and Sukhaswarupa (the form of happiness)॥

We repeatedly bow to the Goddess, the embodiment of Prosperity (Vriddhi) and Accomplishment (Siddhi), who bestows welfare upon those who seek refuge. Repeated salutations to you, the Mother of the World, who is Nairriti (the Lakshmi of the Rakshasas), the Lakshmi of kings, and Sharvani (the wife of Shiva)॥

Eternal salutations to Durga, Durgapara (she who carries across difficult dangers), Sara (the essence of all), Sarvakarini (the cause of all), Khyati (fame), Krishna, and Dhumra Devi॥

We salute the Goddess who is exceedingly gentle and exceedingly fierce, our repeated obeisance to her. Repeated salutations to the Goddess Kriti, the support of the world॥

The Goddess who is called Vishnu-Maya in all beings - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her॥

The Goddess who is called Consciousness (Chetana) in all beings - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her॥

The Goddess who is situated in all beings in the form of Intellect

(Buddhi) - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her.॥ The Goddess who is situated in all beings in the form of Sleep (Nidra) - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her.॥

The Goddess who is situated in all beings in the form of Hunger (Kshudha) - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her.॥

The Goddess who is situated in all beings in the form of Shadow (Chhaya) - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her.॥

The Goddess who is situated in all beings in the form of Power (Shakti) - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her.॥

The Goddess who is situated in all beings in the form of Thirst (Trishna) - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her.॥

The Goddess who is situated in all beings in the form of Forbearance (Kshanti/Kshama) - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her.॥

The Goddess who is situated in all beings in the form of Lineage (Jati) - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her.॥ The Goddess who is situated in all beings in the form of Modesty (Lajja) - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her.॥

The Goddess who is situated in all beings in the form of Peace (Shanti) - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her.॥

The Goddess who is situated in all beings in the form of Faith (Shraddha) - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her.॥ The Goddess who is situated in all beings in the form of Radiance (Kanti) - salutations to her, salutations to her,

repeated salutations to her.॥

The Goddess who is situated in all beings in the form of Prosperity (Lakshmi) - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her.॥

The Goddess who is situated in all beings in the form of Activity (Vritti) - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her.॥ The Goddess who is situated in all beings in the form of Memory (Smriti) - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her.॥

The Goddess who is situated in all beings in the form of Compassion (Daya) - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her.॥

The Goddess who is situated in all beings in the form of Contentment (Tushti) - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her.॥

The Goddess who is situated in all beings in the form of Mother (Mata) - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her.॥

The Goddess who is situated in all beings in the form of Delusion (Bhranti) - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her.॥

Repeated salutations to that Goddess of Pervasion (Vyaptidevi), who is the presiding deity of the aggregate of senses of living beings and who is ever-pervasive in all beings.॥

The Goddess who is situated pervading this entire world in the form of Consciousness - salutations to her, salutations to her, repeated salutations to her.॥

May that Ishwari (Sovereign Goddess), who is the means of welfare, who was praised by the Devas in ancient times upon the attainment of their desired objective, and who was served by the

King of Devas, Indra, for many days, bestow welfare and auspiciousness upon us and destroy all our calamities.॥

May the Mother of the World, whom all of us Devas, distressed by the arrogant demons, are bowing to at this time, and who, when remembered by men humbly devoted, instantly destroys all misfortunes, remove our distress.॥

The Rishi says: - O King! While the Devas were thus offering praise, Goddess Parvati came there to bathe in the water of the Ganga.॥

The Goddess with the beautiful eyebrows asked the Devas, 'Whom are you people praising here?' Then the Shivaa Devi, who had emerged from her own bodily sheath, spoke: -॥

'These assembled Devas, insulted by the demon Shumbha and defeated by Nishumbha in battle, are praising me.'॥ Since Ambika appeared from the bodily sheath (kosh) of Parvati, she is known as 'Kaushiki' in all the worlds.॥

After Kaushiki appeared, the body of Goddess Parvati became dark in colour, and thus she became famous on the Himalayas by the name of Kalika Devi.॥

Thereafter, the servants of Shumbha and Nishumbha, Chanda and Munda, came there and saw the Goddess Ambika, who had assumed an extremely enchanting form.॥

Then they went to Shumbha and said, 'O Great King! There is an extremely captivating woman who is illuminating the Himalayas with her divine radiance.'॥ Such an excellent form has never been seen by anyone anywhere. O Lord of Asuras! Find out who that Goddess is and take her.॥

She is a gem among women; every limb of hers is very beautiful. And with the splendour of her beautiful body, she is spreading light

in all directions. O King of Daityas! She is still present on the Himalayas; you can go and see her.॥

O Lord! All the gems in the three worlds—jewels, elephants, horses, etc.—are now adorning your house.॥

Airavata, the gem among elephants, this Parijata tree, and this horse Uchchaishravas—you have taken all these from Indra.॥

This chariot yoked with swans also adorns your courtyard. This wonderful, gem-like chariot, which was formerly with Brahmaji, has now been brought to your place.॥

You have snatched this Mahapadma treasure from Kubera. The ocean has also presented you with a garland called Kinjalkini, which is adorned with filaments and whose lotuses never wither.॥

Varuna's umbrella, which showers gold, also graces your house, and this excellent chariot, which was previously under the authority of Prajapati, is now with you.॥

O Lord of Daityas! You have also snatched away the power called Utkrantida of Mrityu (Death), and Varuna's noose and all kinds of gems produced in the ocean are under the authority of your brother Nishumbha. Agni has also offered two self-purified garments in your service.॥ O King of Daityas! Thus, you have collected all the gems. Then why do you not take possession of this Goddess, who is a gem among women and is auspicious?॥

The Rishi says: ॥ Hearing this speech of Chanda and Munda, Shumbha sent the great demon Sugriva as a messenger to the Goddess and said, 'By my command, you say these things to her and devise such a plan that she becomes pleased and comes here quickly.'॥

That messenger went to the very beautiful region of the mountain where the Goddess was present and spoke soft words in a sweet voice.॥

The messenger said: ॥ O Goddess! The King of Daityas, Shumbha, is currently the Supreme Lord of the three worlds. I am his messenger and have come here to you.॥

All the Devas always obey his command unanimously. No one can transgress it. He has defeated all the Devas. Listen to the message he has sent for you.॥

'The entire three worlds are under my control. The Devas also follow my command. I myself enjoy the shares of all the sacrifices separately.॥ All the best gems in the three worlds are under my authority. Airavata, the vehicle of Devraj Indra, which is like a gem among elephants, I have seized.॥

The horse-gem Uchchaishravas, which appeared from the churning of the milky ocean, was humbly submitted to me by the Devas.॥ O Beautiful One! Besides them, all other gem-like objects that belonged to the Devas, Gandharvas, and Nagas have all come to me.॥

O Goddess! We consider you to be the gem among the women of the world, so you should come to us; because we are the enjoyers of the gems.॥

O beautiful woman with restless glances! Come into the service of me or my brother, the great valiant Nishumbha; because you are the embodiment of a gem.॥

By choosing me, you will attain immense, incomparable prosperity. Pondering this with your own intellect, become my wife.'॥

The Rishi says: ॥ When the messenger said this, the auspicious Goddess Durga Devi, who sustains this world, smiled profoundly in her heart and spoke thus: -॥

The Goddess said: ॥ O Messenger! You have spoken the truth; there is not the slightest falsehood in it. Shumbha is the lord of the three worlds, and Nishumbha is equally valiant.॥

But how can I break the vow I have taken in this matter? Listen to the vow I made earlier due to my limited intellect: -॥

'Whoever conquers me in battle, who crushes my pride, and who is as strong as me in the world, he shall be my husband.'॥

Therefore, let Shumbha or the great demon Nishumbha himself come here and, conquering me, quickly take my hand in marriage. What is the need for delay in this?॥

The messenger said: ॥ O Goddess! You are full of arrogance; do not speak such things in front of me. Who is the man in the three worlds who can stand before Shumbha and Nishumbha?॥

O Goddess! Even all the Devas cannot stand in battle before other demons, so how can you, a lone woman, stand?॥

How will you, a woman, go before those Shumbha and other demons before whom even Indra and all the other Devas did not stand in battle?॥

Therefore, come with me to Shumbha and Nishumbha, as I say. By doing so, your honour will be protected; otherwise, when they drag you by the hair, you will have to go having lost your prestige.॥

The Goddess said: ॥ Your saying is right, Shumbha is powerful, and Nishumbha is also very valiant, but what can I do? I made a vow earlier without thinking.॥

Therefore, now you go; convey, with respect, everything I have told you to the King of the Daityas. Then let them do whatever they deem appropriate.॥

Thus, in the Shri Markandeya Purana, in the narrative of the Savarni Manvantara,

The fifth chapter, named 'Dialogue between the Goddess and the Messenger' in Devi Mahatmya, is completed.

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

Our Services

- Name Correction
- Lo Shu Grid reading
- Missing Number Remedies
- Business Name Correction
- Baby Name Correction
- Kundali Matching
- Lucky Mobile Number
- Lucky House Number
- Lucky Vehicle Number
- Home Vastu
- Office Vastu

Free Numerology Tools

- Numerology Name Calculator
- Lo Shu Grid Calculator
- Lucky Mobile Number Calculator
- Lucky Vehicle Number Calculator

- Numerology Kundali Matching Tool